पद १९

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

येणें नोहे सिद्धी। व्यर्थचि खटपट पाहीं।।२।। सांगत माणिक।

करूं नये आणिक। लाग तूं सदुरुपायीं।।३।।

समज मूढा गुरुवीण तुज गति नाही।।ध्रु.।। फिरोनिया देशोदेशी।

कोटी तीर्थे नाहसी। करिसी तूं नाना उपाय।।१।। योग याग विधी।